



१२. साम्राज्य की प्रगति

अब तक हमने मराठी सत्ता के उदय और विस्तार का अध्ययन किया। हमने यह भी देखा कि स्वराज्य की स्थापना से लेकर साम्राज्य विस्तार तक की यात्रा किस प्रकार पूर्ण हुई। उत्तर भारत में मराठों का जो साम्राज्य विस्तार हुआ; उसमें जिन सरदार घरानों ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया; उनकी संक्षिप्त जानकारी हम इस पाठ में लेंगे।

इंदौर के होळकर : मल्हारराव इंदौर की होळकर सत्ता के प्रवर्तक थे। उन्होंने दीर्घकाल तक मराठी राज्य की सेवा की। वे गुरिल्ला युद्ध प्रणाली में निष्णात थे। बाजीराव प्रथम और नानासाहब के



मल्हारराव होळकर

शासनकाल में उन्होंने उत्तर में पराक्रम दिखाया। मालवा और राजपूताना में मराठों का वर्चस्व स्थापित करने में उनका बहुत बड़ा योगदान रहा। पानीपत

युद्ध के बाद उत्तर में मराठों की गिरती प्रतिष्ठा को सँवारने में माधवराव पेशवा को उनका बहुत बड़ा सहयोग प्राप्त हुआ।

पुण्यश्लोक अहिल्याबाई मल्हारराव का बेटा खंडेराव की पत्नी थीं। कुंभेरी के युद्ध में खंडेराव की मृत्यु हुई। कालांतर में मल्हारराव का भी निधन हो गया। उसके पश्चात इंदौर के प्रशासन की बागडोर अहिल्याबाई के हाथ में आई। वह महान कूटनीतिक और उत्तम



अहिल्याबाई होळकर

प्रशासक थीं। उन्होंने नए कानून बनाकर भू-राजस्व, कर की वसूली जैसी बातों को व्यवस्थित स्वरूप प्रदान किया। बंजर भूमि को बोआई के लिए उपयोग में लाना, किसानों के लिए कुएँ खुदवाना, व्यापार-उद्योग को प्रोत्साहन देना, ताल-तालाबों का निर्माण करवाना आदि कार्यों के लिए उन्होंने परिश्रम उठाए। भारत में चारों दिशाओं में स्थित महत्त्वपूर्ण धार्मिक स्थानों पर उन्होंने मंदिर, घाट, मठ, धर्मशालाएँ, प्याऊ का निर्माण करवाया। इस रूप में देश की सांस्कृतिक एकता का उनके द्वारा किया गया प्रयास महत्त्वपूर्ण था। वह स्वयं न्याय-फैसले करती थीं। वह महादानी और ग्रंथप्रेमी थीं। उन्होंने लगभग अट्ठाईस वर्ष सक्षमता से राज्य प्रशासन चलाया और उत्तर में मराठी सत्ता की छवि को उज्ज्वल बनाया। राज्य में शांति और सुव्यवस्था स्थापित कर प्रजा को सुखी बनाया। मराठाशाही के गिरते समय में यशवंतराव होळकर ने राज्य को बचाने का प्रयास किया।

नागपुर के भोसले : नागपुर के भोसले घराने में परसोजी भोसले को शाहू महाराज के कार्यकाल में वन्हाड (बरार) और



रघुजी भोसले

गोंडवाना प्रदेशों की सनद (आदेशपत्र) दी गई थी। नागपुर के जितने भोसले हुए; उनमें रघुजी सबमें पराक्रमी और कार्यकुशल पुरुष थे। वह दक्षिण के तिरुचिरापल्ली और अर्काट के आसपास के प्रदेश को मराठों के प्रभुत्व में ले आया। शाहू महाराज ने बंगाल, बिहार और ओडिशा प्रांतों की चौथ वसूली के अधिकार रघुजी को दिए थे। वह उन प्रदेशों को मराठों के आधिपत्य में ले आया। ई.स. १७५१ में नागपुर के भोसलों ने ओडिशा सूबा अली वरदी खान से जीत लिया।

कालांतर में ई.स.१८०३ तक ओडिशा पर मराठों का प्रभुत्व था।



क्या तुम जानते हो ?

मराठा डिच - कोलकाता के अंग्रेज नागपुर के भोसलों से बुरी तरह भयभीत थे। मराठों के संभावित आक्रमण से कोलकाता शहर को सुरक्षित रखने के लिए उन्होंने शहर के चारों ओर एक खंदक खुदवाई थी। यह खंदक मराठी डिच नाम से विख्यात हुई।

ग्वालियर के शिंदे : बाजीराव प्रथम ने राणोजी शिंदे के शौर्य और पराक्रम को भाँप लिया था। अतः



महादजी शिंदे

उसे उत्तर का सरदार नियुक्त किया। राणोजी की मृत्यु के पश्चात उनके बेटों - जयाप्पा, दत्ताजी और महादजी ने भी अपनी वीरता के बल पर उत्तर भारत में मराठी सत्ता को सामर्थ्यवान बनाया।

माधवराव पेशवा ने शिंदे परिवार का सरदार पद महादजी को प्रदान किया। वह वीर और चतुर राजनीतिज्ञ था। पानीपत की पराजय के पश्चात उसने उत्तर भारत में मराठों के प्रभुत्व और प्रतिष्ठा को स्थापित करने का कार्य किया। वह भली-भाँति जानता था कि उत्तर भारत के समतल प्रदेश में मराठों की गुरिल्ला युद्ध प्रणाली उपयोगी सिद्ध नहीं होगी। अतः उसने फ्रांसीसी सेना विशेषज्ञ डिबॉइन के मार्गदर्शन में अपनी सेना को प्रशिक्षित किया और तोपखाना सुसज्जित किया। इस प्रशिक्षित सेना के बल पर उसने रुहेले, जाट, राजपूत, बुंदेला आदि से आत्मसमर्पण करवाया।

पानीपत के युद्ध के बाद मराठों की शक्ति क्षीण

हो गई है; यह देखकर अंग्रेजों ने दिल्ली की राजनीति में प्रवेश करना प्रारंभ किया। उन्होंने बंगाल सूबे के दीवानी अधिकार अपने हाथ में ले लिए। वे दिल्ली के पातशाह को अपने नियंत्रण में कर लेना चाहते थे। इस विपरीत स्थिति में महादजी शिंदे ने अंग्रेजों को मात देकर दिल्ली के बादशाह को पुनः गद्दी पर बैठाया। इस कार्य पर प्रसन्न होकर दिल्ली पातशाह ने उसे 'वकील-ए-मुत्तक' उपाधि प्रदान की अर्थात् दीवानी और सेना अधिकार का नियंत्रण उसे सौंपा। उसने उस उपाधि को बाल पेशवा सवाई माधवराव की ओर से स्वीकार किया। इस उपाधि के कारण दिल्ली पातशाही पूर्णतः मराठों के नियंत्रण में आ गई। लड़खड़ाती-ढहती मुगल सत्ता की अट्टालिका को संभालना सरल कार्य नहीं था। महादजी ने अत्यंत प्रतिकूल परिस्थिति पर विजय पाकर बड़ी दृढ़ता से ई.स.१७८४ से १७९४ की अवधि में दिल्ली का प्रशासन चलाया।

पानीपत युद्ध के लिए नजीब खान उत्तरदायी था। उसके उत्तराधिकारी अभी भी रुहेलखंड में षडयंत्र कर रहे थे। नजीब का पोता गुलाम कादिर ने लाल किला अपने अधिकार में कर लिया और धन के लिए बादशाह और बेगमों को यंत्रणाएँ दी। बादशाह की आँखें निकाली और राजकोष हड़प लिया। इस स्थिति में महादजी ने कादिर को पराजित किया। कादिर द्वारा हड़प की हुई संपत्ति लेकर बादशाह को लौटाई। बादशाह को पुनः दिल्ली की गद्दी पर बिठाया। इस प्रकार महादजी ने पानीपत युद्ध के पश्चात मराठों की साख पुनः प्राप्त कराई। दिल्ली के पातशाह को मराठों के नियंत्रण में रखकर भारत की राजनीति चलाई।

पेशवाओं में चलने वाले गृहयुद्ध का परिणाम यह हुआ कि रघुनाथराव अंग्रेजों के आश्रय में चला गया था। अंग्रेजों की सहायता से पेशवा पद प्राप्त करना उसका उद्देश्य था और मराठी कूटनीतिज्ञों को यह स्वीकार न था। अतः मराठे और अंग्रेजों के बीच का संघर्ष अटल था लेकिन इससे इतना तो

स्पष्ट हो गया कि हिंदुस्तान पर शासन कौन करेगा; इसका अंतिम निर्णय मराठे और अंग्रेजों के बीच होने वाला था ।

अंग्रेज मुंबई से बोरघाट मार्ग द्वारा मराठों पर आक्रमण करने आए । महादजी शिंदे के नेतृत्व में मराठी सेना एकत्रित आई थी । मराठों ने गुरिल्ला युद्ध नीति का अवलंब कर अंग्रेजों को रसद प्राप्त नहीं होने दी । दोनों सेनाएँ वड़गाँव में (वर्तमान पुणे-मुंबई राजमार्ग पर) एक-दूसरे के आमने-सामने आईं । इस युद्ध में अंग्रेजों की पराजय हुई । परिणामस्वरूप अंग्रेजों के लिए आवश्यक हो गया कि वे रघुनाथराव को मराठों को सौंप दे ।

दिल्ली पर ई.स.१८०३ तक मराठों का नियंत्रण था । अंग्रेजों ने भारत पर विजय पाई परंतु मराठों से लड़कर; यदि यह ध्यान में आया तो महादजी के कार्यों का महत्त्व समझ में आता है । दिल्ली के प्रशासन को सुस्थिति में लाकर वे पुणे आए । पुणे के समीप वानवडी में उनकी मृत्यु हुई । वहीं उनकी स्मृति में छतरी बनाई गई है ।



शिंदे की छतरी, वानवडी-पुणे

शिंदे, होळकर और भोसले की भाँति अन्य कुछ प्रमुख सरदारों ने मराठी राज्य की उल्लेखनीय सेवा की ।

शिवाजी महाराज ने जिस नौसेना का निर्माण करवाया; उसे कान्होजी और तुळाजी आंग्रे पिता-

पुत्र ने शक्तिशाली बनाया । इसी शक्तिशाली नौसेना के बल पर उन्होंने पुर्तगाली, अंग्रेज और सिद्दी जैसी नौसैनिकी सत्ताओं को अपने नियंत्रण में रखा और मराठी राज्य के तटक्षेत्र की रक्षा की ।

सेनापति खंडेराव दाभाडे और उसका बेटा त्रिंबकराव ने गुजरात में मराठी सत्ता की नींव रखी । खंडेराव की मृत्यु के पश्चात उसकी पत्नी उमाबाई ने अहमदाबाद के मुगल सरदार को पराजित किया । वहाँ का किला जीत लिया । आगे चलकर गायकवाडों ने गुजरात के वडोदरा (बड़ौदा) को अपना सत्ता केंद्र बनाया । उत्तर में मराठी सत्ता का विस्तार करने में मध्य प्रदेश के धार और देवास के पवारों ने शिंदे और होळकर को बहुमूल्य योगदान दिया ।

सेनापति माधवराव पेशवा की मृत्यु के पश्चात



नाना फडणवीस

मराठी राज्यव्यवस्था अस्त-व्यस्त हो गई । उसे नाना फडणवीस और महादजी शिंदे पटरी पर ले आए । जब महादजी उत्तर भारत में मराठों का वर्चस्व स्थापित करने में व्यस्त थे, उस समय नाना ने दक्षिण

की राजनीति की बागडोर संभाली । इस कार्य में उसे पटवर्धन, हरिपंत फडके, रास्ते आदि सरदारों का सहयोग प्राप्त हुआ । फलस्वरूप दक्षिण में मराठी सत्ता का वर्चस्व स्थापित हुआ । इंदौर के होळकर, नागपुर के भोसले, ग्वालियर के शिंदे, वडोदरा के गायकवाड ने अपने पराक्रम, नेतृत्व, कार्य आदि गुणों के बल पर मराठी सत्ता को वैभवशाली बनाया । ये सभी मराठी सत्ता के अंतिम चरण के आधार स्तंभ थे ।

मराठी सत्ता का उत्तर और दक्षिण भारत में प्रभाव निर्माण करने में मराठे सरदार सफल हुए परंतु महादजी शिंदे और नाना फडणवीस की मृत्यु के बाद

मराठी सत्ता का पतन प्रारंभ हुआ। इस कालखंड में रघुनाथराव का बेटा बाजीराव द्वितीय पेशवा था। उसमें नेतृत्व योग्यता का अभाव था। इसके विपरीत उसमें अनेक दोष थे। वह मराठा सरदारों में एकता निर्माण नहीं कर सका। मराठा सरदारों में आपसी फूट पैदा होने से मराठी सत्ता भीतर से खोखली होती गई। ऐसे अनेक कारणों से बाजीराव द्वितीय के कार्यकाल में मराठों का उत्तर और दक्षिण में प्रभाव क्षीण होता गया। मराठी सत्ता का स्थान अंग्रेजों ने ले लिया।

ई.स. १८१७ में अंग्रेजों ने पुणे को अपने अधिकार में कर लिया और वहाँ अपना 'यूनियन जैक' ध्वज

फहराया। ई.स. १८१८ में सोलापुर जिले के आष्टी नामक स्थान पर हुई लड़ाई में अंग्रेजों ने मराठों को पराजित किया। फलतः मराठी सत्ता समाप्त हो गई। यह घटना भारतीय इतिहास में बहुत बड़ी परिवर्तनकारी घटना सिद्ध हुई। इस घटना के पश्चात अंग्रेज लगभग संपूर्ण भारत को अपने आधिपत्य में ले आए। भारत का पश्चिमी विश्व के साथ संपर्क बढ़ा। इसके साथ-साथ भारतीय समाज व्यवस्था में कई परिवर्तन हुए। अनेक पुरानी बातें कालबाह्य हो गईं और हाशिये पर चली गईं। एक बहुत बड़ा बदलाव आया। भारतीय इतिहास का मध्यकाल समाप्त हुआ और आधुनिक कालखंड का प्रारंभ हुआ।



स्वाध्याय

१. एक शब्द में लिखो :

- (१) इंदौर के राज्य प्रशासन की बागडोर संभालने वाली -
- (२) नागपुर के भोसले घराने में सबसे पराक्रमी और कार्यक्षम पुरुष -
- (३) दिल्ली की गद्दी पर बादशाह को बैठाने वाले -
- (४) दक्षिण की राजनीति की बागडोर संभालनेवाले -

२. घटनाक्रम लिखो :

- (१) आष्टी की लड़ाई (२) मराठों का ओडिशा पर प्रभुत्व (३) अंग्रेजों ने पुणे पर यूनियन जैक फहराया।

३. लेखन करो :

- (१) अहिल्याबाई होलकर द्वारा किए गए कार्य।
- (२) महादजी शिंदे का पराक्रम।
- (३) गुजरात में मराठी सत्ता।

४. मराठी सत्ता समाप्त होने के कारण : विचार-विमर्श करो।

उपक्रम

मराठी सत्ता के विस्तार में अपना योगदान देनेवाले घरानों की जानकारी का सचित्र संग्रह बनाओ। विद्यालय में उसकी प्रदर्शनी लगाओ।



शनिवारवाडा, पुणे

